मामा मिति

वंगारी मथाई की कहानी

मामा मिति

वंगारी मथाई की कहानी
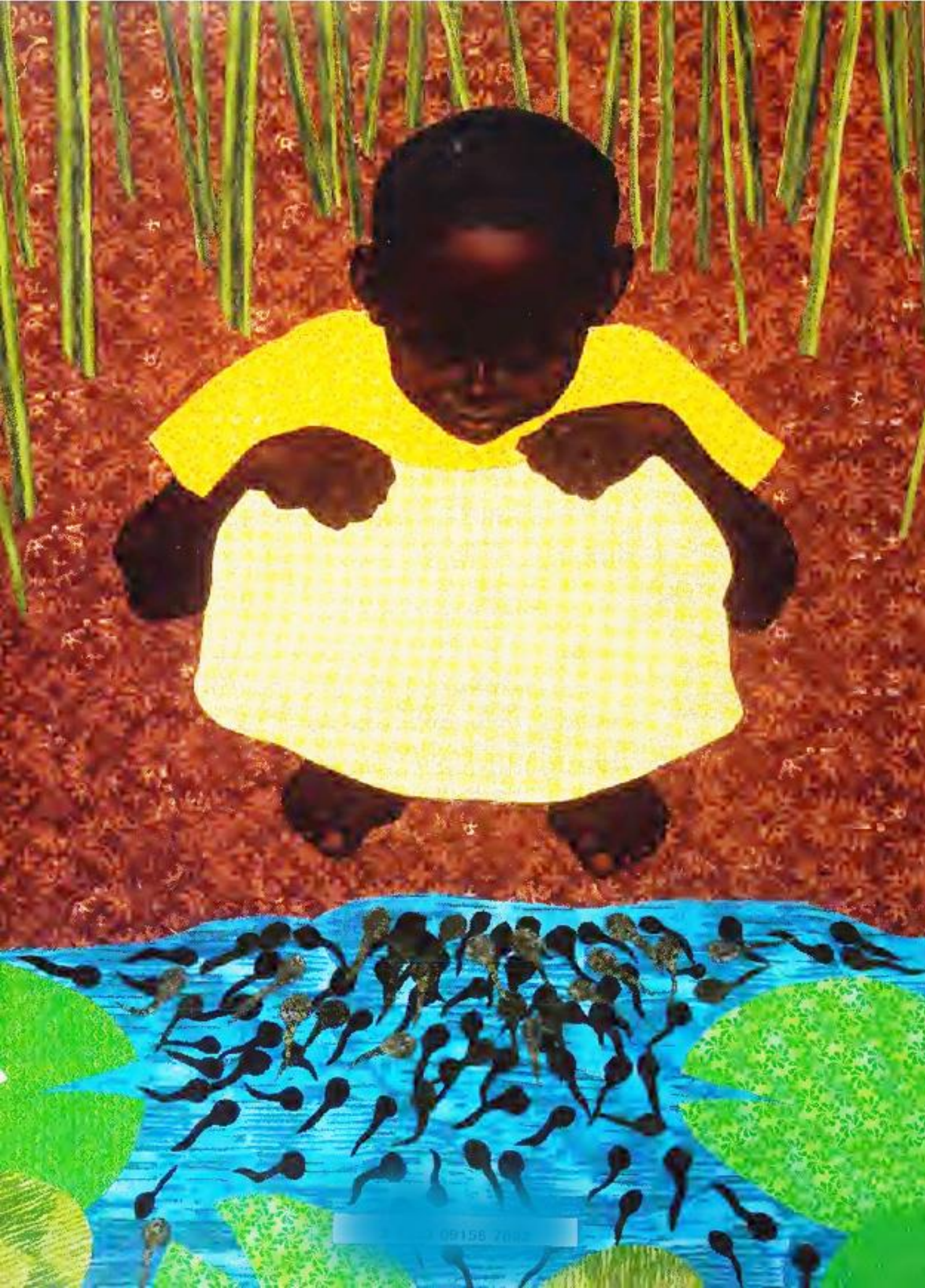
अफ्रीका की उन्नत भूमि पर
जंगलों और मैदानों और नमक की चट्टानों के निकट
वंगारी का जन्म हुआ था.
माउंट केन्या उसे देखकर मुस्करा दिया था.
लोगों ने उन प्राचीन दिनों की कहानियाँ सुनाईं
जब कभी-कभी सूर्य देर तक और बहुत तेज़ चमकता था.
अकाल पड़ जाता था. सब जीवों को
कष्ट झेलना पड़ता था. पेड़-पौधे सूख जाते थे.
लोग आपस में लड़ते थे. इसलिए विशाल अंजीर के पेड़
के नीचे लोगों ने अनुष्ठान किये.
आकाश ने उन पर अनुकंपा की और
खूब वर्षा हुई. लोगों की और उनके खेतों की प्यास बुझी.
गाँव के बूढ़े लोगों ने थिगी पेड़ से काट कर लट्ठ
क्रोधित आदमियों के बीच रखे और
शत्रु मित्र बन गए.

वंगारी ने यह कहानियाँ सुनीं. इन्हें सुनकर उसने पेड़ों को प्यार करना और उनका सम्मान करना सीखा. इन्हीं कहानियों से उसने अपने परिवार और अपने गाँव और अपने देश और महाद्वीप की परम्पराओं को जाना.

बड़े होने पर वंगारी एक नगर में काम करने लगी. लेकिन उसने अपने पूर्वजों के ज्ञान को सदा याद रखा. उसने अपने घर के पिछवाड़े में पेड़ लगाए. अपने मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए वह अकसर इन पेड़ों के नीचे बैठ जाती थी.

एक दिन एक गरीब औरत पश्चिमी घाटी से बुद्धिमान वंगारी के पास आई. उस औरत के बच्चे माँ के पीछे से मुस्कराती हुई नीली पोशाक पहने वंगारी को छिप-छिप कर देख रहे थे. "अपने परिवार को खिलाने के लिए मेरे पास पर्याप्त भोजन नहीं है," गरीब औरत ने कहा. "इमारती लकड़ी के कारखाने में अब मेरे लिए कोई काम नहीं है. कोई और काम मैं करना नहीं जानती. मैं क्या करूं?"
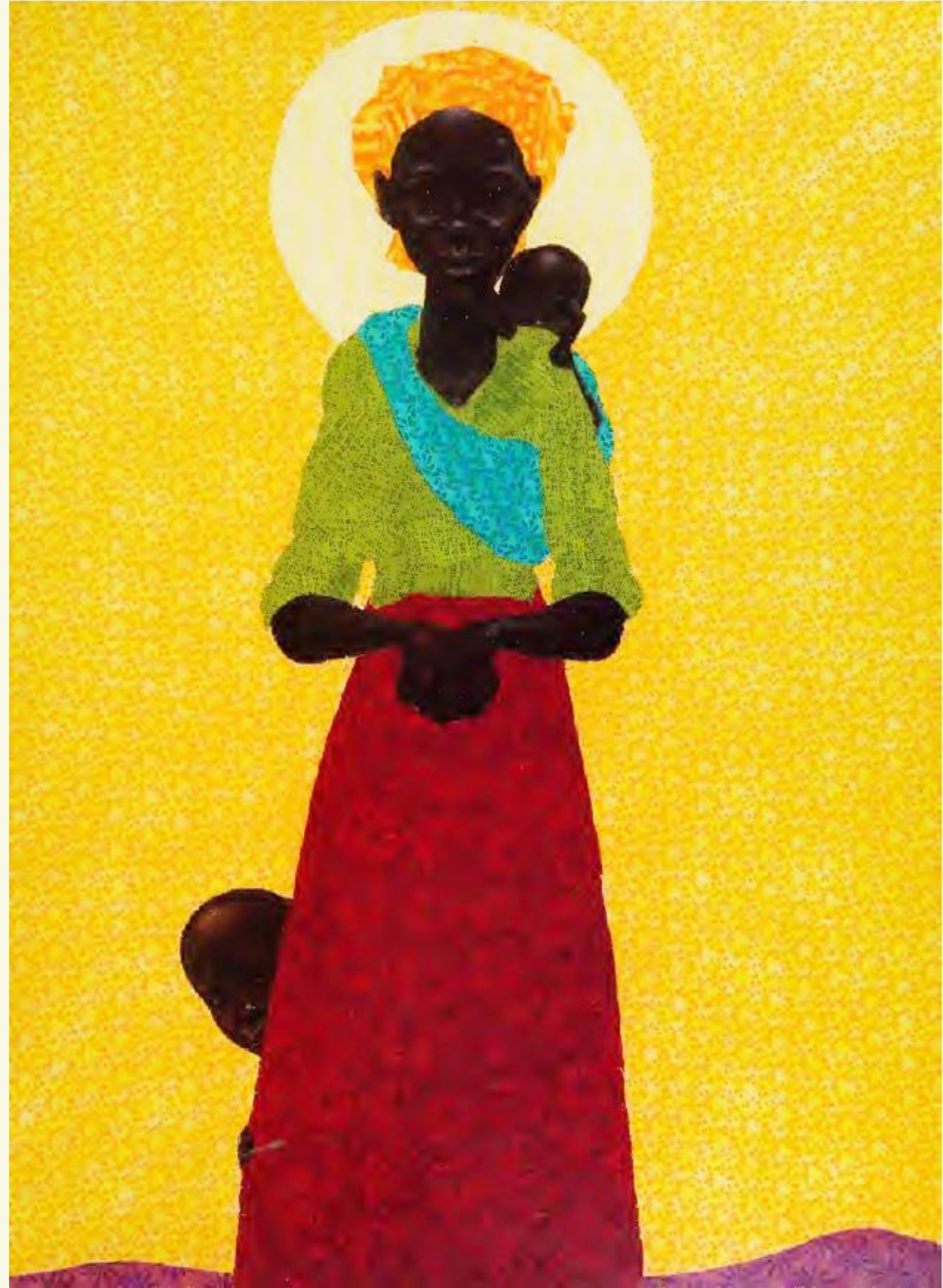
वंगारी ने औरत के हाथ पकड़े और उन्हें घुमा कर देखा. उसने एक-एक कर बच्चों के हाथ भी अपने हाथों में लेकर देखे. “यह मज़बूत हाथ हैं. मुबिरू मुइरू पेड़ों के यह नन्हें पौधे हैं. यह पेड़ लगाओ. जितने पेड़ लगा सकती हो उतने लगाओ. उनके फल खाओ.”

शांत, मेरे स्वजनों

वह औरत अपने बच्चों के साथ घर लौट गई. अपने मज़बूत हाथों से उन्होंने एक-एक कर कई पेड़ लगाए. कुछ वर्षों बाद जब फूलों का मौसम समाप्त हो गया परिवार ने उन पेड़ों के चमकते, गोल-गोल फल खाए. अपने पड़ोसियों को भी फल दिए. पड़ोसी फल खाकर बीज अपने साथ ले गये और उन्होंने भी अपने लिये मुबिरू मुइरू के पेड़ लगाए.

एक अन्य औरत बुद्धिमान वंगारी के पास आई. वह भी उतनी ही गरीब थी जितनी पहली औरत थी. यह दक्षिण के पहाड़ों से आई थी. रस्सी समान पतली उसकी बेटियाँ उसके पास खड़ी थीं. “खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी की तलाश में मैं और मेरी बेटियाँ हर दिन घंटों चलती हैं,” उस दुखी औरत ने कहा. “इस काम में इतना समय लग जाता है कि कुछ और करने के लिए हमें समय ही नहीं मिलता. मैं क्या कर सकती हूँ?”

वंगारी ने उस औरत की बाँहें पकड़ी. “यह मज़बूत बाँहें हैं,” उसने कहा. “पेड़ लगाओ. मुकिन्दुरी पेड़ के यह नन्हें पौधे हैं. इस पेड़ की लकड़ी अच्छा ईंधन होती है. जितने पेड़ लगा सकती हो उतने पेड़ लगाओ.”

शांत, मेरे स्वजनों

उस औरत और उसकी बेटियों ने वह पेड़ लगाये. समय बीतने पर वह पेड़ खूब बड़े हो गये. औरत और उसकी बेटियाँ पेड़ों की शाखाएं काट कर चूल्हे में जलातीं. उन्होंने उन पेड़ों के नन्हें पौधे अपने पड़ोसियों को दिए. पड़ोसी उन्हें अपने साथ ले गये और उन्हें ज़मीन में लगा दिया जो उनके अपने मुकिन्दुरी के पेड़ बन गये.

एक औरत से दूसरी औरत तक यह बात फैलती गई और अंततः केन्या की हर औरत को बुद्धिमान वंगारी के बारे जानकारी मिल गई. हर जगह से, एक के बाद एक, औरतें उसके पास आने लगीं और इस तरह कई वर्ष बीत गये.
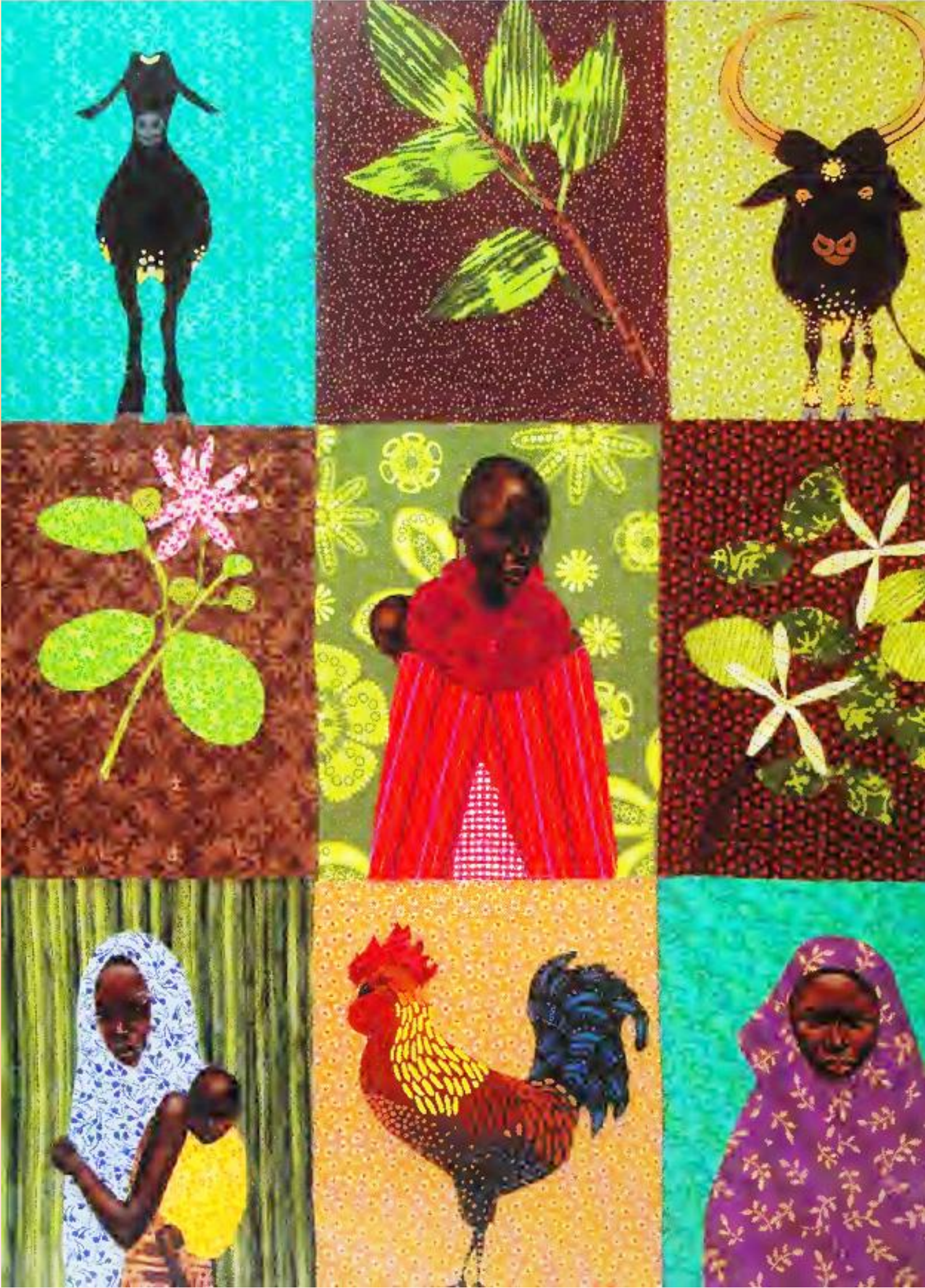
"हमारी बकरियाँ भूख से मर रही है," उत्तर के रेगिस्तान से आई औरत ने कहा. "हमारे पास तो अपने लिए भी पर्याप्त भोजन नहीं है. मेरे पति जानवरों को कैसे खाना दे सकते हैं?"

"पेड़ लगाओ, मुहेरेगेंदी के पेड़. उनके पत्ते पशुओं के लिए बढ़िया चारा होते हैं. जितने पेड़ लगा सकते हो उतने लगाओ."

शांत, मेरे स्वजनों

"मेरी गायें बीमार हैं," दूसरी ने कहा जो सवान्ना से आई थी. "उनकी दवाई खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं.

"पेड़ लगाओ. मुथाक्वा वा अथी के पेड़ लगाओ. इनके पत्ते पशुओं की बीमारी दूर करते हैं."

शांत, मेरे स्वजनों

"जंगली जानवर रात में आते हैं और मेरी मुर्गियाँ चुरा लेते हैं," मछुआरों के गाँव से आई औरत ने कहा. चिंता में उसने अपना सिर हिलाया.

"पेड़ लगाओ. मुकावा के पेड़. इनके कांटे जंगली पशुओं को दूर रखेंगे."

शांत, मेरे स्वजनों

"मेरा घर टूट गया," एक अन्य औरत ने रोते हुए कहा. वह सागर तट से आई थी. "अब हमारे पास कोई आश्रय नहीं है."

"पेड़ लगाओ. मुलुहकुहा के पेड़ लगाओ. इनकी लकड़ी घर बनाने के लिए उपयोगी होती है."

शांत, मेरे स्वजनों

वंगारी ने औरतों से कहा कि वह मुरिगोनो के पेड़ लगाएं, जिनकी डालों से घुइयाँ के बेलें लगाने के लिए अच्छे खूंटे बन जाते हैं.

उसने उन्हें मुहुटी के पेड़ लगाने के लिए कहा, जिनसे पशुओं के अहाते के लिए प्राकृतिक बाड़ा बन जाता है.

उसने उन्हें मुइगोया के पेड़ लगाने को कहा, जिनके पत्तों में केले लपेट कर पकाए जा सकते हैं.

उसने उन्हें मुरिंगा के पेड़ लगाने को कहा जिनके सफ़ेद फूल किसी को भी आनंदित कर देते हैं.

और जब उसके अपने गाँव से एक औरत आई और शिकायत करने लगी कि नदी का पानी पीने योग्य न रहा था तो वंगारी ने उसे पवित्र अंजीर के विशाल पेड़ लगाने को कहा. वह पेड़ खूब पानी सोख लेते हैं और नदियों के पानी को साफ़ करने का प्राकृतिक फिल्टर का काम करते हैं.

शांत, मेरे स्वजनों.
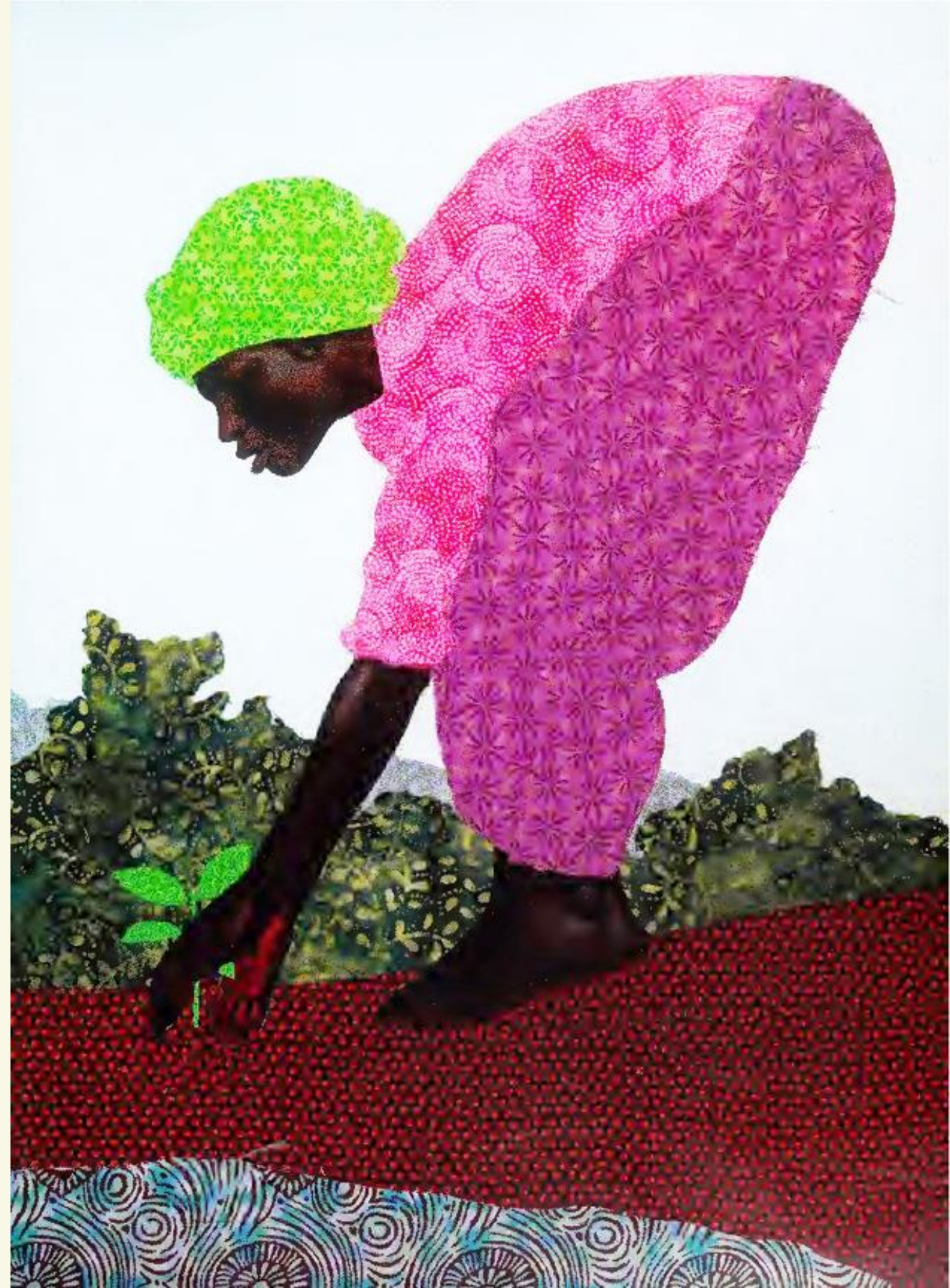
शीघ्र ही नदी में साफ पानी बहने लगा जिसमें मेंढकों के असंख्य बच्चे तैर रहे थे वैसे ही जैसे वंगारी की पोषक पर दिखते थे, वैसे ही जैसे वंगारी ने पानी में स्वयं देखे थे जब वह छोटी थी और जब केन्या में हर जगह पेड़ और पशु थे और लोग प्रकृति का सम्मान करते थे.

हर उस जगह पर जहाँ से पेड़ लुप्त हो गये थे वह दुबारा लौट आये हैं. एक समय केन्या की राजधानी नैरोबी कीनुइनी के नाम से जानी जाती थी, ऐसी जगह जहाँ अनेक मीनू के पेड़ थे. अब वह फिर से कीनुइनी बन गई है.

केन्या फिर से सशक्त और शांत है.
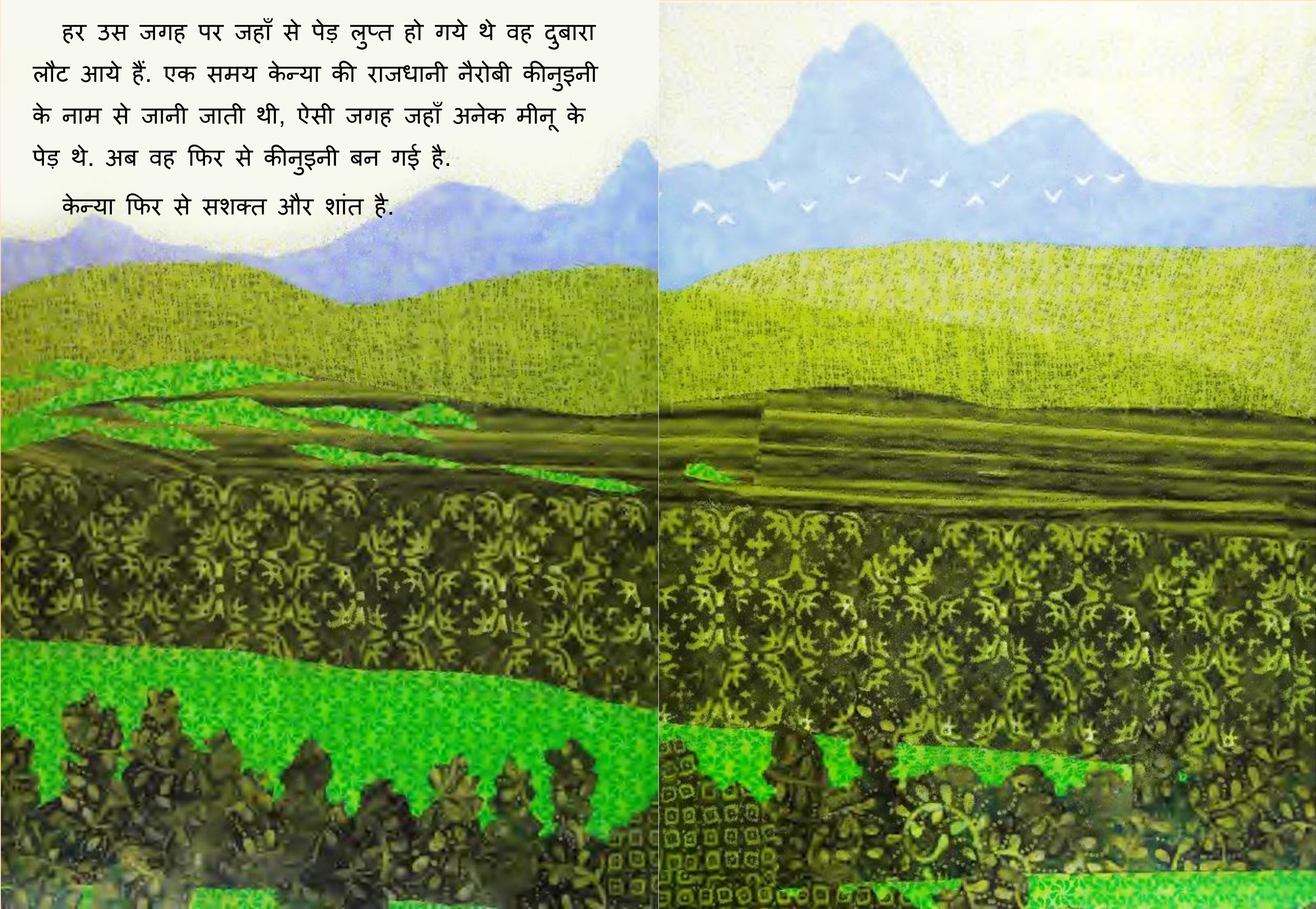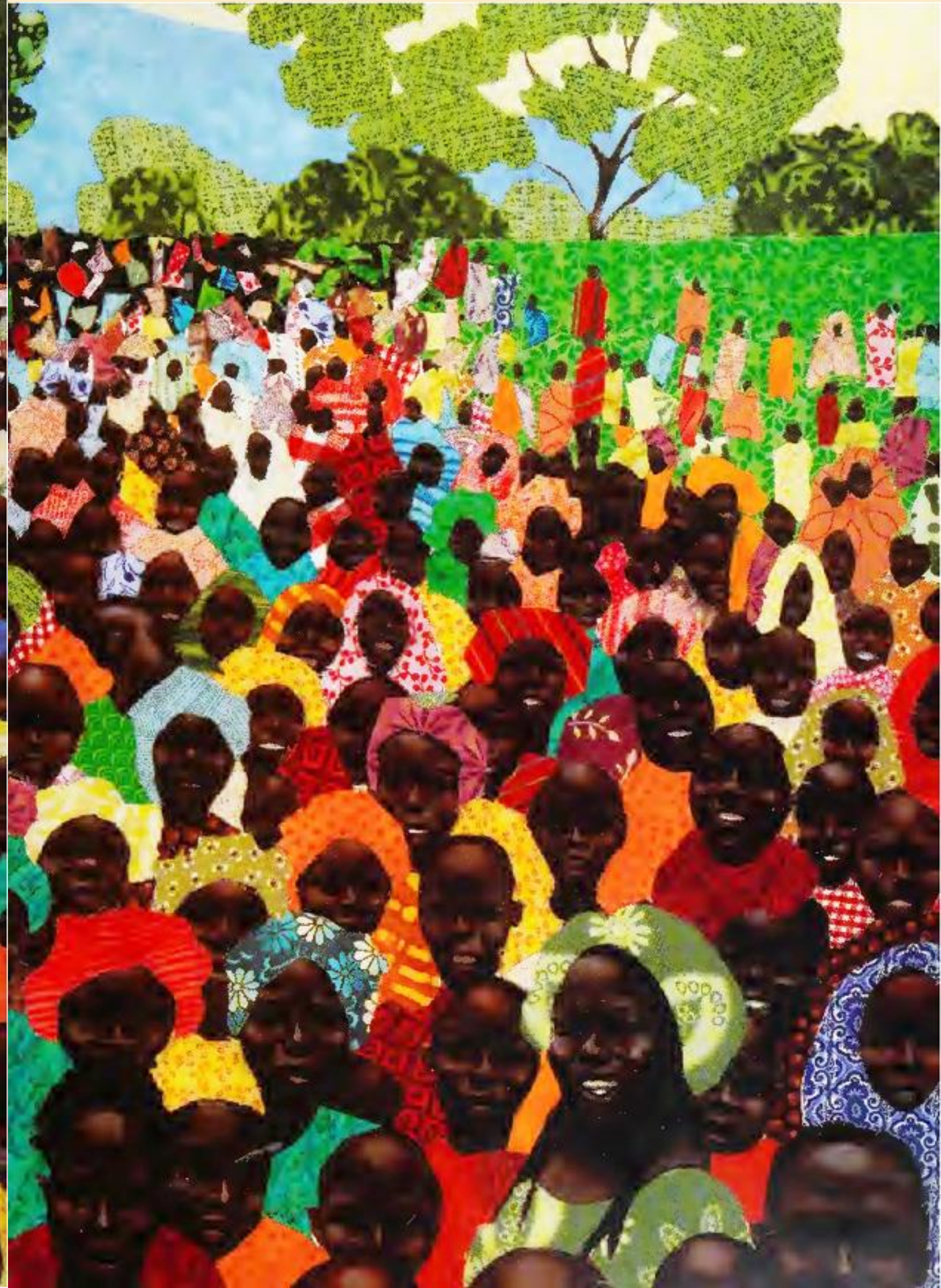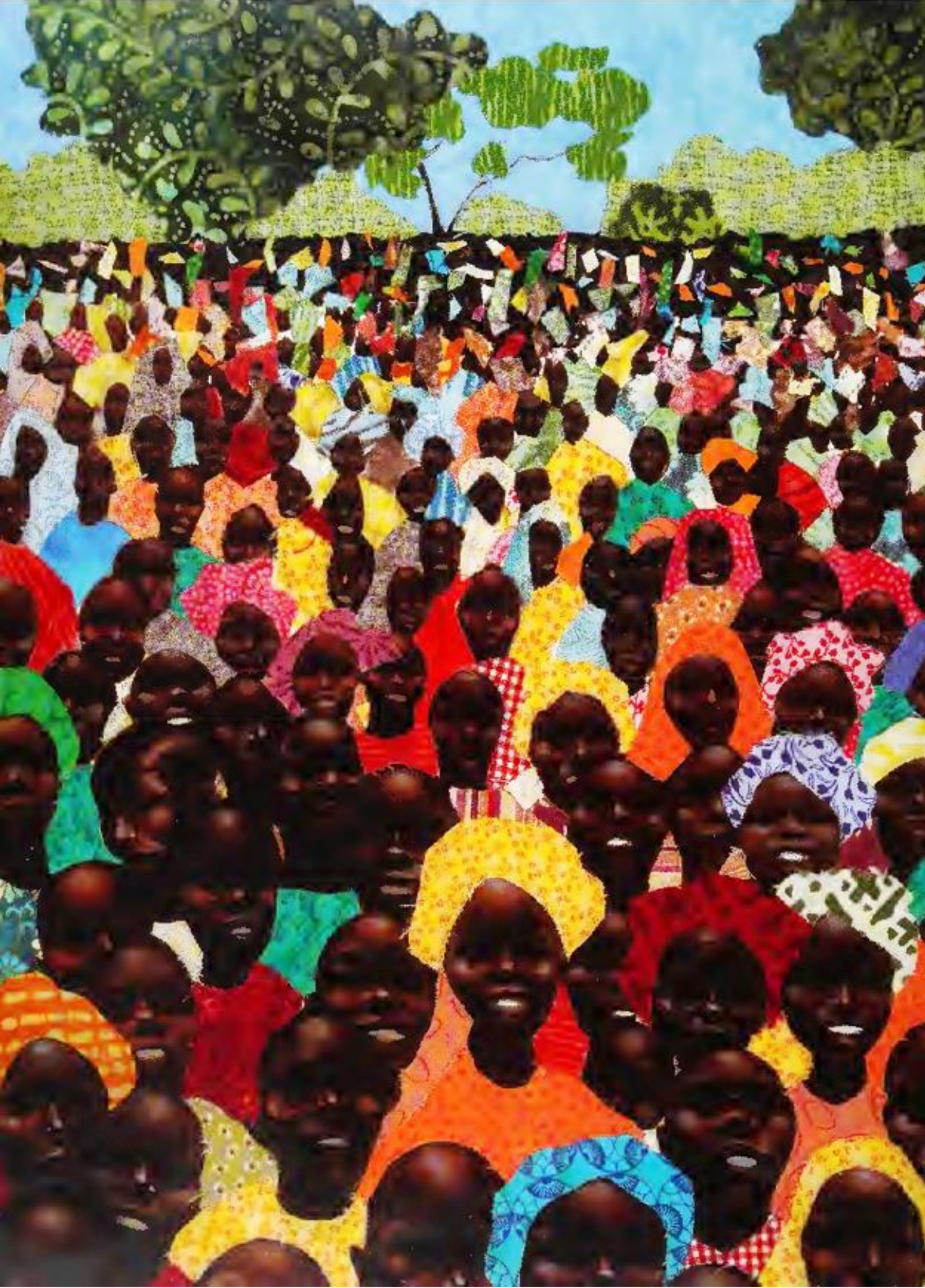
वंगारी ने एक-एक पेड़ लगा कर देश को बदल दिया है. उसने अपने देशवासियों को पेड़ों का सम्मान करने की प्राचीन परम्परा फिर से सिखलाई है. और अब यही ज्ञान वह बाकी दुनिया को दे रही है. वह मामा मिति-पेड़ों की माता-के नाम से प्रसिद्ध ही गई है. पेड़ लगा कर एक बुद्धिमान महिला ने हमें एक शिक्षा दी है जिसे हम सब अपना सकते है: 'एक पेड़ लगाओ.'

शांत, मेरे स्वजनों.

वंगारी मुटा माथई पहली अफ्रीकन औरत थी जिसे नोबेल पुरस्कार मिला था.

वंगारी का जन्म केन्या में पहली अप्रैल १९४० के दिन हुआ था. उन दिनों गाँव की लड़कियों को पढ़ने का अवसर नहीं मिलता था. लेकिन वंगारी को अमरीका और जर्मनी में पढ़ने का अवसर मिला. केन्या लौट कर वह नैरोबी यूनिवर्सिटी में पशु-चिकित्सा विभाग में कार्य करने लगी. मध्य या पूर्वी अफ्रीका की वह पहली महिला थी जिसे पीएच डी की डिग्री मिली. वह यूनिवर्सिटी में पढ़ाती थी और अंततः पशु-चिकित्सा विभाग की प्रमुख बनी, ऐसा करने वाली वह पहली औरत थी. इसके पहले केन्या की किसी यूनिवर्सिटी में कोई औरत किसी विभाग की प्रमुख न बनी थी.

पशु और प्रकृति के अध्ययन करने से पर्यावरण, स्थाई विकास, प्राकृतिक संसाधन और वन्यजीवों के क्षेत्र में वह लोगों के लिए एक मार्गदर्शक बन गई. नेशनल कौंसिल ऑफ़ वीमेन में काम करते हुए १९७६ में उसने ग्रीन बेल्ट मूवमेंट की शुरुआत की. केन्या में वनों के नाश को रोकने का यह एक उत्साही प्रयास था. वर्षों तक साहस के साथ वह लोगों को लगातार समझाती रही कि प्रकृति के साथ तालमेल के साथ ही जीना होगा. उसे उन राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों के साथ जूझना पड़ा जो वनों को काटकर लाभ प्राप्त कर रही थीं. १९९१ में उसे जेल में डाल दिया गया. लेकिन अमेनेस्टी इंटरनेशनल के पत्र अभियान के चलते उसे रिहा कर दिया गया. लेकिन इस घटना के बाद भी उसे कई बार जेल जाना पड़ा परन्तु वह अपने पथ से कभी विचलित नहीं हुई. लोगों ने २००२ में उसे पार्लियामेंट के लिया चुन लिया और दो वर्षों बाद उसे नोबेल पुरस्कार दिया गया.

१९७६ में केन्या में शांति स्थापित करने के लिए उसने पेड़ लगाने का अभियान शुरू किया. तब से ग्रीन बेल्ट मूवमेंट ने कोई तीस लाख पेड़ लगाए हैं. पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, हवा और पानी को साफ़ करते हैं, लोगों को ईंधन, फल, खाना, घर बनाने के लिए लकड़ी देते है. यह काम प्राय गाँव को औरतों ने किया जो प्रकृति को सुरक्षित रखने की अपनी जिम्मेवारी निभा रही हैं. पर इस कार्य में पुरुषों ने भी उसका साथ दिया.

शांत, मेरे स्वजनों.